Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.H.D. - 11

हिन्दी कहानी

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Archana Sisodia,* M.A., M.Phil., Ph.D. (Hindi)

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

<u>Content</u>

हिन्दी कहानी

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-4
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-4
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-3

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	तीसरी कसम : विश्लेषण और मूल्यांकन	1
2.	डिप्टी कलक्टरी : विश्लेषण और मूल्यांकन	9
3.	बदबू : विश्लेषण और मूल्यांकन	18
4.	राजा निरबंसिया : विश्लेषण और मूल्यांकन	27
5.	बिरादरी : विश्लेषण और मूल्यांकन	35
6.	हंसा जाई अकेला : विश्लेषण और मूल्यांकन	41
7.	यही सच है : विश्लेषण और मूल्यांकन	49
8.	मलबे का मालिक : विश्लेषण और मूल्यांकन	57
9.	बहिर्गमन : विश्लेषण और मूल्यांकन	65

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

10. गौरैया : विश्लेषण और मूल्यांकन 72

11. ड्राइंग रूम : विश्लेषण और मूल्यांकन 79

12. क्लॉड ईथरली : विश्लेषण और मूल्यांकन 88

13. एक जीता-जागता व्यक्ति : विश्लेषण और मूल्यांकन 93

14. सुख : विश्लेषण और मूल्यांकन 101

15. हरी बिन्दी : विश्लेषण और मूल्यांकन 108

16. बोलने वाली औरत : विश्लेषण और मूल्यांकन 113

17. पार्टीशन : विश्लेषण और मूल्यांकन 123

18. स्विमिंग पूल : विश्लेषण और मूल्यांकन 127

19. बायोडाटा : विश्लेषण और मूल्यांकन 134

20. सिलिया : विश्लेषण और मूल्यांकन 141

21. तलाश : विश्लेषण और मूल्यांकन 148

■ ■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिन्दी कहानी

M.H.D.-11

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) एक तो पीठ में गुदगुदी लग रही है। दूसरे रह-रहकर चम्पा का फूल खिल जाता है उसकी गाड़ी में। बैलों को डाँटो तो 'इस-बिस' करने लगती है उसकी सवारी। ....उसकी सवारी! औरत अकेली, तम्बाकू बेचने वाली बूढ़ी नहीं! आवाज सुनने के बाद वह बार-बार मुड़कर टप्पर में एक नजर डाल देता है, अंगोछे से पीठ झाड़ता है! भगवान जाने क्या लिखा है इस बार उसकी किस्मत में! गाड़ी जब पूरब की ओर मुड़ी, एक टुकड़ा चाँदनी उसकी गाड़ी में समा गयी। सवारी की नाक पर एक जुगनू जगमगा उठा।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानी 'तीसरी कसम' से लिया गया है। हीरामन गाड़ीवान है। उसकी गाड़ी में आज एक सुंदर युवती बैठी है। उसकी मीठी आवाज सुनकर वह उसकी आयु और सुंदरता का अनुमान लगाता है। आगे बढ़ने पर चाँदनी में उसके चेहरे की एक झलक पाकर हीरामन प्रसन्न हो उठता है।

व्याख्या–सुंदर युवती के गाड़ी में बैठने पर हीरामन के तन-बदन में गुदगुदी हो रही है अर्थात वह मन-ही-मन हर्षा रहा है। उसे ऐसा लगता है कि उस युवती के रूप में चंपा का फूल उसकी गाड़ी में खिल जाता है। यदि हीरामन बैलों को डाँटता है, तो वह महिला सवारी हीरामन को डाँटने लगती है, उसकी मधुर ध्वनि से हीरामन को ज्ञात हो जाता है कि उसकी गाड़ी में बैठी स्त्री कोई तंबाकू बेचने वाली वृद्धा न होकर सुंदर युवती है। वह बार-बार पीछे मुड़कर स्त्री का चेहरा देखने का प्रयास करता है, किंतु अंधेरा होने के कारण उसे कुछ दिखाई नहीं देता, तो वह सोचता है कि भगवान जाने, उसकी किस्मत में इस बार क्या लिखा है। पूरब की ओर मुड़ने पर गाड़ी में थोड़ी-सी चाँदनी पड़ती है, इससे गाड़ी में बैठी स्त्री की नाक की नथ का नग जगमगा उठता है, इससे हीरामन स्त्री के रूप का अनुमान लगाकर प्रसन्न हो जाता है।

विशेष–1. लोकभाषा का प्रभाव है।

2. एक युवा के मन में आयु के अनुरूप उठने वाले भावों का सजीव अंकन है।

3. भाषा चित्रात्मक है।

(ख) कॉलेज के दिनों में मैं कम्युनिस्ट पार्टी का कार्ड-होल्डर था और त्रिपाठी ने बताया था कि वह सोशलिस्ट पार्टी का सक्रिय सदस्य था। सरकारी नौकरी में आने से पहले त्रिपाठी सोशलिस्ट पार्टी के एक अखबार का सम्पादक था और जन-सभाओं में आग उगला करता था। कहा जाता है कि उसके बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर तत्कालीन मुख्यमंत्री ने उसे पालतू बना लिया और उसके गले में सरकारी तौक पड़ गया। अब हम दोनों सरकारी नौकर थे।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश अखिलेश की कहानी 'बायोडाटा' से उद्‌धृत है। इस गद्यांश में यह बताने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार युवा राजनीति समाज सेवा के लिए, बल्कि पार्टी एवं सरकार में पद पाने अथवा सरकारी नौकरी पाने के लिए करते हैं।

व्याख्या–कहानी का नायक कहता है कि मैं कॉलेज के दिनों में कम्युनिस्ट पार्टी में कार्ड-होल्डर का काम करता था और त्रिपाठी सोशलिस्ट पार्टी का सदस्य था। वह उस समय तक अखबार के संपादक के रूप में जन-सभाओं में जनता की समस्याओं पर इस प्रकार बोलता था कि लोग प्रभावित हो जाते थे। उसका प्रभाव बढ़ रहा था, जिससे मुख्यमंत्री ने उसे अपने खास लोगों में शामिल कर लिया था। इससे उसे सरकारी संरक्षण मिल गया और हम दोनों ने इसका लाभ उठाकर सरकारी नौकरी प्राप्त कर ली।

विशेष–1. राजनीति किस प्रकार स्वार्थ साधने का माध्यम है, इस पर व्यंग्य है।

2. वर्तमान युवा पीढ़ी की स्वार्थसिद्धि और विकृत मानसिकता की अभिव्यक्ति है।

3. भाषा व्यंग्यात्मक है।

(ग) सिर्फ एक दुबला-पतना बुड्ढा मुसलमान ही उस दिन वीरान बाजार में आया और वहां की नयी और जली हुई इमारतों को देखकर जैसे भूलभुलैया में पड़ गया। बायीं तरफ जाने वाली गली के पास पहुंचकर उसके पैर अन्दर मुड़ने को हुए, मगर फिर वह हिचकिचाकर वहां बाहर ही खड़ा रह गया। जैसे उसे विश्वास नहीं हुआ कि वह वही गली में जिसमें

वह जाना चाहता है। गली में एक तरफ कुछ बच्चे कीड़ी-कीड़ी खेल रहे थे और कुछ फासले पर दो स्त्रियां ऊंची आवाज में चीखती हुई एक-दूसरे को गालियां दे रही थीं।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश मोहन राकेश की कहानी 'मलबे का मालिक' से उद्धृत है। इस कहानी में विभाजन के समय पाकिस्तान गया एक मुसलमान गनी मियां वर्षों बाद भारत लौटकर अपने पुराने घर को देखने जाता है। वहां का वातावरण देखकर उसके मन में अनेक भाव उठते हैं।

व्याख्या–एक दुबला-पतला मुसलमान वीरान पड़े बाजार में आया और वहां की नई जली इमारतों को देखने लगा उसे लगा मानों वह किसी भूलभुलैया में आ गया है। वह बाईं तरफ मुड़ने वाली गली के कोने पर पहुँचा। मुड़ने से पहले उसने थोड़ी झिझक के साथ अंदर झांका। उसे हैरानी हुई कि यह वही गली है, जिसमें वह जाना चाहता है, उस गली में कुछ बच्चे खेल रहे थे और स्त्रियां एक-दूसरे पर चीख-चिल्लाते हुए गालियां दे रही थीं।

विशेष–1. विभाजन के बाद बदले समाज एवं वातावरण की अभिव्यक्ति है।

2. किसी स्थान से एक बार जाने के बाद, उस स्थान पर पुनः लौटने पर होने वाली झिझक का वर्णन है।

3. भाषा दृश्यात्मक एवं वर्णनात्मक है।

(घ) ''और फिर दूसरों की दया पर सम्मान? अपने निजत्व को खोकर दूसरों के शतरंज का मोहरा बनकर रह जाना, बैसाखियों पर चलते हुए जीना–नहीं कभी नहीं! सिलिया सोचती 'हम क्या इतने भी लाचार हैं, आत्म-सम्मान रहित हैं, हमारा अपना भी तो कुछ अहं भाव है। उन्हें हमारी जरूरत हे, हमको उनकी जरूरत नहीं। हम उनके भरोसे क्यों रहें। पढ़ाई करूँगी, पढ़ती रहूँगी, शिक्षा के साथ अपने व्यक्तित्व को भी बड़ा बनाऊँगी। उन सभी परम्पराओं के कारणों का पता लगाऊँगी, जिन्होंने उन्हें अछूत बना दिया। विद्या, बुद्धि और विवेक से अपने आपको ऊँचा सिद्ध करके रहूँगी। किसी के सामने झुकूँगी नहीं।''

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश सुशीला टाकभौरे की कहानी 'सिलिया' से लिया गया है। यह कहानी समाज में विशेषकर दलित समाज की स्त्री के शोषण की कथा है। सिलिया अपने प्रति अपने लोगों के ही अपमानपूर्ण व्यवहार पर विचार करते हुए सोचती है।

व्याख्या–सिलिया सोचती है कि दूसरों की दया पर सम्मान पाना और दूसरों पर निर्भरता से अपना निजत्व खोकर जीवन नहीं जीना। सिलिया यह भी सोचती है कि क्या हम दलित लोग पूरी तरह विवश, आत्म-सम्मान से रहित आर अहंभाव से शून्य हैं अर्थात क्या हमारी अपनी कोई पहचान नहीं है। फिर वह संकल्प लेती है कि अब दूसरों के भरोसे न रहकर वह पढ़-लिखकर अपने व्यक्तित्व को बड़ा बनाएगी। वह उन्हें अछूत बनाने वाली परंपराओं का पता लगाकर उन्हें समाप्त करने का प्रयास करेगी। मैं जाति से नहीं, बल्कि विद्या, बुद्धि और विवेक से स्वयं का व्यक्तित्व ऊँचा बनाऊँगी और किसी के सामने सिर नहीं झुकाऊँगी।

विशेष–1. दलितों की शोचनीय स्थिति का वर्णन है।

2. शिक्षा के महत्त्व को दर्शाया गया है।

3. दृढ़ संकल्प से ही जाति के बंधन तोड़े जा सकते हैं।

4. भाषा बोलचाल की है।

5. आत्ममंथनात्मक शैली है।

प्रश्न 2. 'डिप्टी कलक्टरी' कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-16, प्रश्न 6

प्रश्न 3. 'यही सच है' कहानी की पात्र दीपा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-50, 'दीपा', पृष्ठ-53, प्रश्न 4

प्रश्न 4. मुक्तिबोध की कहानी 'क्लॉड ईथरली' में निहित फैंटेसी शिल्प को विश्लेषित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-89, 'फैंटेसी और मुक्तिबोध की कहानी'

प्रश्न 5. 'हरी बिन्दी' कहानी की स्त्री-दृष्टि को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-110, प्रश्न 1

प्रश्न 6. 'पार्टीशन' कहानी की भाषा पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-124, 'पार्टीशन की भाषा और शैली', पृष्ठ-126, अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 7. निम्नलिखित पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) 'गौरेया' कहानी का मूल भाव

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-74, 'गौरया :, पाठ-बोध और प्रक्रिया'

(ख) कमलेश्वर का कथा शिल्प

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-27, 'परिचय', पृष्ठ-30, प्रश्न 2

(ग) 'एक जीता-जागता व्यक्ति' कहानी के पात्र

उत्तर–'एक जीता-जागता व्यक्ति' दो-ढाई पृष्ठों की अत्यंत छोटे आकार की कहानी है। 'मैं' शैली में निर्मित इस कहानी के वाचक को साइकिल से अपनी मिल के लिए जाते समय निर्माणाधीन सड़क के गीले कोलतार में फंसी हुई एक चिड़िया दिखाई देती है, जो मुक्ति के लिये छटपटाती हुई अनेक प्रयास कर रही थी, उसकी दशा को देखकर कथावाचक मनुष्य के समान ही उसके मुक्ति प्रयत्नों को जोड़ते हुए उसकी जिजीविषा, संघर्ष शक्ति में स्वयं को एक प्रकार से अभिव्यक्त करने लगता है। वह उसकी मुक्ति के उद्देश्य से उसकी सहायता के लिए ज्यों ही आगे बढ़ता है, चिड़िया अपनी सारी शक्ति एकत्र करके मुक्ति प्राप्त कर लेती है और बस्ती की ओर उड़कर चली जाती है। कहानी के इस अंत को रघुवीर सहाय ने वास्तव में मनुष्य की मुक्ति, उसकी जिजीविषा, उसके जीवन यथार्थ को एक क्रूर त्रासदी के रूप में दर्शाया है, जिसे भोगने के लिए वह अभिशप्त है।

(घ) 'तलाश' कहानी की मूल संवेदना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-21, पृष्ठ-150, प्रश्न 1

NEERAJ PUBLICATION www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

हिन्दी कहानी

तीसरी कसम : विश्लेषण और मूल्यांकन

1

परिचय

सन 1950 से 1965 के मध्य तक रचित कहानी साहित्य को अनेक वैचारिक वाद-विवादों से गुजरने के पश्चात 'नयी कहानी' नाम से जाना गया, जिसने एक आंदोलन का रूप लेते हुए बदलते देशकाल तथा मानसिकता सहित कहानी की वस्तु व रूपविधान को नवीन सिरे से परिभाषित किया। इन कहानीकारों में राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर तथा मोहन राकेश उल्लेखनीय हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात मध्यवर्गीय जीवन में अनेक परिवर्तनों का आरंभ हुआ, जिसके कारण नयी कहानी के दौर की कहानियों में कथा विषयों के रचना-विधान सहित वस्तुगत आधार भी परिवर्तित हो गया। अत: नयी कहानी के कथाकारों ने शहरी मध्यवर्ग की इसी परिवर्तित संवेदना को अपनी कहानियों का केन्द्रबिन्दु बनाया है।

फणीनश्वरनाथ 'रेणु' ग्राम संवेदना के प्रतिनिधि रचनाकार हैं, जिन्होंने नयी कहानी की अनेक कथाधाराओं को समग्रता से विश्लेषित करते हुए उसकी संवेदना, प्रतिबद्धताओं, दर्शन तथा बहुलता को शहरी संवेदना के कथा-साहित्य से अलग बदलाव के परिदृश्य को पाठकों के समक्ष उपस्थित किया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

नयी कहानी आन्दोलन : ग्राम संवेदना और आँचलिकता

'नयी कहानी' में विद्यमान 'अनुभव की प्रामाणिकता' का आग्रह ही इसे अन्य कहानी प्रवृत्तियों से भिन्न बनाता है। 'अनभुव की प्रामाणिकता' को बहुधा 'जिये हुए या भोगे हुए' अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है, किन्तु यह वास्तव में रचना के विधान तथा भाषा के माध्यम से अनुभव की विश्वसनीयता को प्रस्तुत करने की कला मात्र है। इसी कला को अनुभव की प्रामाणिकता के संदर्भ में रेणु ने अपनी कहानी 'तीसरी कसम' में प्रयुक्त किया है।

'नयी कहानी' को स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में आने वाले अनेक बदलावों के रूप में भी देखा जाता है, जिसके कुछ लक्षण 1950 की घटनाओं के साथ संबंधित हैं तथा नवीनता का सूत्रपात करने के लिए भी काफी सीमा तक उत्तरदायी हैं।

स्वाधीनता की पूर्वसंध्या की विरासत

'साहित्य में गतिरोध' नामक आलेख के माध्यम से नयी कविता आंदोलन के प्रमुख कवि विजयदेव नारायण साही ने सन् 1953 में पिछले दस वर्षों के साहित्यिक परिदृश्य (1943 से 1953 तक) की तीन प्रवृत्तियों को स्वाधीनता की पूर्वसंध्या के रूप में उजागर किया है, जिसमें से पहली प्रवृत्ति यह थी कि 1950-51 की प्रगतिवादी धारा से गुजरते हुए लेखकों के आत्मालोचन तथा आत्म-परीक्षण की प्रक्रिया के फलस्वरूप साहित्य की व्यापक जनवादी चेतना संकुचित तथा सीमित हो गई थी और वे कम्युनिस्ट पार्टी की सामयिक नीति मात्र को साहित्य-सृजन मान चुके थे।

अति-आधुनिकतावाद नयी कहानी की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति है, जिसमें समस्त प्रतिष्ठित मूल्यों को अस्वीकार कर उदात्त तथा पवित्र को सर्वथा अविश्वसनीय रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अति-आधुनिकता में व्यक्ति की मानसिक अवस्था को सर्वोच्च मानते हुए वास्तविकता को प्रकट करने की प्रवृत्ति पायी जाती है। अति-आधुनिकता की इसी प्रवृत्ति की प्रबलता के कारण इसकी अवधि लम्बी तथा स्थायी नहीं रह सकी, क्योंकि इसमें सर्जनात्मकता की भूमिका शून्य थी।

नयी कहानी की तीसरी प्रवृत्ति इसकी विविधता, विचित्रता तथा अनुभूत सत्य है, जो हिंदी के अधिकांश साहित्यकारों का प्रमुख स्वर बना तथा जिसने सन 1942 में साम्राज्यवादी ताकतों के विरुद्ध एक शस्त्रहीन व साधनहीन क्रांति का बिगुल बजाया था

तथा जिन्होंने रक्तपात से विचलित होकर अपने मानवीय मूल्यों को नहीं भुलाया था। वास्तव में साही नयी कहानी की इन तीनों प्रवृत्तियों के आधार पर उस पर लगे अनास्थावाद, द्रोह और मूल्यध्वंस के आरोपों से युवा लेखन को बचाने का प्रयास करते हैं। नयी कहानी के लेखकों ने अपने लेखन में जिस चारित्रिक अराजकता, अनास्था, व्यक्तित्व के बिखराव, निराशावादिता को अपनाया था, उसे उस समय कम्युनिस्ट पार्टी ने स्वाधीनता नहीं माना था।

1953 में पिछले दस वर्षों में जो अधिक संयत, समंजित तथा संतुलित व सर्जनात्मक मूल्य नयी कहानी में विकसित हुए थे, वही स्वाधीनता की पूर्वसंध्या की विरासत के परिदृश्य में नयी पीढ़ी के आगमन में देखे जा सकते थे, जिसने प्रगतिवादिता, आधुनिकता, समाजवादिता से ऊपर व्यक्तिपरक समाजोन्मुखता को लेकर चलना प्रारंभ किया, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति एकाग्र तथा केन्द्रीभूत हो गया। इस प्रकार की शहरी संवेदना को नयी कहानी के माध्यम से नगरीकरण की प्रक्रिया के परिवर्तन के रूप में दर्शाया गया, जिसे व्यक्ति अपने स्नायुतंत्र पर अनुभव कर रहा था।

फणीश्वरनाथ रेणु, ऐसे ही रचनाकार हैं, जो स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय तथा प्रतिबद्ध रहते हुए भी अपने सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े रहे और जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से इसी संस्कृति को व्यापक जनवादी तथा लोकपरक तत्त्वों तक प्रसारित करने का प्रशंसनीय कार्य किया था।

ग्राम संवेदना

स्वतंत्रता का आशय ग्रामीण भारत के लिए शहरी भारत से बिल्कुल विपरीत था, क्योंकि विदेशी सत्ता के हाथों ग्राम-शिल्प व उद्योग-धंधों का पहले ही विनाश हो चुका था और शेष कमी जमींदारी तथा ताल्लुकेदारी व्यवस्था ने किसानों को बर्बाद करके पूरी कर दी। यद्यपि आजादी की लड़ाई में किसानों ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी तथापि आजादी के उपरांत भी उन्हें आशा के अनुरूप परिणाम प्राप्त नहीं हुए तथा उनको प्राप्त स्थान भी उनसे लगातार छिनता चला गया। इसकी पृष्ठभूमि में महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि स्वतंत्र भारत की अर्थव्यवस्था में अचानक से जो परिवर्तन आया, वह उपयुक्त तैयारी के बिना लागू कर दिया था। कृषि प्रधान देश को औद्योगीकरण के मॉडल के अनुरूप बनाने का प्रयास तो भरपूर किया गया, किन्तु गांव शहरों के उपनिवेश ही बने रहे और असंतुलन की स्थिति में औद्योगीकरण की आवश्यकताओं को पूर्ण न कर पाने की दशा में कृषिभूमि का निरंतर ह्रास होता चला गया, जिसके परिणाम शिल्पी व श्रमिक वर्गों के पलायन तथा विस्थापन के रूप में बड़े पैमाने पर सामने आने लगे।

कृषि से किसान के अस्तित्व के जुड़े होने के कारण पराधीन भारत में जमींदारी व्यवस्था जहां किसानों की बदतर स्थिति के लिए उत्तरदायी थी, वहीं आजादी के उपरांत भी स्थिति में अधिक सुधार नहीं हुआ, क्योंकि जमींदारी उन्मूलन से संबंधित कानून अधिकांश राज्यों, जैसे बिहार आदि में देर से लागू किए गए तथा इन कानूनों में भी खेतिहर व भूमिहीन किसानों को कोई स्थान नहीं मिला। इन्हीं कारणों से फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कर्मस्थली व रचनास्थली बिहार का 'पूर्णिया' ग्राम-अंचल बना है। जमींदारी, जजमानी तथा परजा-पउनी जैसे संबंधों में आजादी के बाद बदलाव आने से किसानों की स्थिति में सुधार की आशा की गयी, किन्तु स्वतंत्रता का पहला दशक स्वप्नदर्शी समय बनकर रह गया।

टूटते परिवार, असफल विवाह, अवसाद, अहंकेन्द्रित टकराव जैसी शहरोन्मुखी संवेदना स्वतंत्रता के बाद प्रथम दशक में नयी कहानी के रूप में सामने आयी, जिसमें श्रीलाल शुक्ल, रेणु, नागार्जुन, अमरकान्त जैसे कथाकारों ने ग्राम विकास योजना पर ध्यान केन्द्रित करते हुए ग्राम्य जीवन का वर्णन किया। ग्राम्य जीवन को शहरीकरण की प्रक्रिया के मध्य गांव से विस्थापित होकर शहर में बसने वाले लोगों के माध्यम से विविध स्थितियों को विषय-वस्तु का प्रमुख आधार नयी कहानी के कथाकारों ने बनाया है, जिसमें स्वाधीनता के बाद के गांवों के लोक जीवन को उजागर किया है, इनमें प्रेमचन्द के गांव के परिदृश्य भिन्नता तथा नवीनता लिए हुए हैं।

आँचलिकता

नयी कहानी के शिल्प में आँचलिकता का विकास महत्त्वपूर्ण है। आंचलिकता के अंतर्गत वस्तु-सामग्री तथा शिल्प कौशल सहित स्थानीयता, भौगोलिक परिस्थितियां, निवासियों का चरित्र, उनकी जीवन पद्धति, घटनाक्रम और चरित्र-व्यवहार जैसे तत्त्वों को सम्मिलित किया जाता है। बलवंत सिंह के 'काले कोस', 'दो अकालगढ़' जैसे उपन्यास आँचलिकता के अप्रतिम तथा विशिष्ट उदाहरण हैं।

स्थानीयता आँचलिकता का एक अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व भी है, जिसका सृजन भाषा, परिवेश, तीज-त्यौहार, रहन-सहन तथा लोकजीवन के सूक्ष्म-निरीक्षण द्वारा साकार चित्र के रूप में किया जाता है। स्थानीयता में क्योंकि परिवेश की वास्तविकता, लोक जीवन के तत्त्व तथा पात्रों की जीवंतता समाहित होती है, इसलिए कोई भी ग्राम-अंचल की कहानी ठोस परिवेश की कहानी का रूप लेते हुए आँचलिकता को स्पर्श करती है। हिन्दी कथा-साहित्य में इसी आंचलिकता का प्रारंभ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' से माना जाता है।

रेणु औद्योगीकरण की भीड़ से 'लोकजीवन' को हटाकर उसकी सांस्कृतिक चेतना तथा उससे अनुप्राणित जीवन-पद्धति के कुशल चितेरे हैं। उनका प्रत्येक पात्र व्यक्ति के रूप में विशिष्ट तथा साकार रूप ग्रहण करता है, जोकि रेणु के लेखन की प्रमुख विशेषता है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानियां और नयी कहानी

बिहार के पूर्णिया के ओराहीं हिंगना नामक गाँव में जन्मे फणीनश्वरनाथ 'रेणु' सामाजिक सरोकार रखने वाले नागरिक और देशभक्त थे, जिन्होंने 'भारत छोड़ो आंदोलन' तथा आजादी के बाद

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

नेपाल में जनता के साथ सशक्त क्रांति में सक्रिय भाग लिया था, साथ ही साहित्य-सृजन के माध्यम से वे शोषण व दमन के विरुद्ध आजीवन संघर्षरत रहे। अपने 'मैला आँचल' (1954) उपन्यास के माध्यम से उन्होंने शीघ्र ख्याति प्राप्त की। उन्होंने जयप्रकाश नारायण के आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण पुलिस की यातना सहकर जेल की सजा भी भोगी।

रेणु आयु तथा रचनाकार की दृष्टि से प्रेमचन्द की बाद की पीढ़ी के तथा नयी कहानी आंदोलन की स्वातंत्र्योत्तर पीढ़ी के मध्य में रहने वाले समवयस्क कहानीकारों, जैसे अज्ञेय, यशपाल आदि की श्रेणी में रखे जाते हैं।

रेणु ने अनेक गद्य विधाओं, जैसे उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज आदि सभी को अपनी प्रतिभा से संवारा है। 'मैला आँचल', 'दीर्घतपा', 'परती परिकथा' (उपन्यास), 'ठुमरी', 'आदिम रात्रि की महक', 'अगिनखोर', 'अच्छे आदमी' (कहानी संग्रह), 'समय की शिला पर', 'वनतुलसी की गंध', 'ऋणजल-धनजल' आदि गद्यरूपों की विभिन्न विधाओं (संस्मरण रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि) के संकलन हैं, जो उनकी विशिष्ट प्रतिभा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' को गांव की समृद्ध संस्कृति के चित्रण के साथ ही अंचल के पिछड़ेपन को उजागर करने में हिचक अनुभव नहीं होती है। गरीब किसान, लोक कलाकार, अंचल के अभावों, अंधविश्वासों, रुग्णता से ग्रस्त जीवन, मनमुटाव, छोटी-छोटी ईर्ष्याओं, स्पर्द्धाओं आदि अत्यंत सूक्ष्म तथा स्वाभाविक चित्रण करने में रेणु सिद्धहस्त हैं। 'रसपिरिया' तथा 'तीसरी कसम' जैसी कहानियों में प्रेम की संवेदना का चित्रण है तो 'पंचलैट' में प्रतीकात्मक रूप में औद्योगीकरण और यंत्रयुग का जिसमें प्रेम के साथ विनोद का स्वर भी विद्यमान है। 'संवदिया', 'आत्मसाक्षी', 'संकट', 'तंबे एकला चॅलो रे' नामक कहानियों में रेणु ने ग्रामीण समाज के परिवेश के चित्रण के साथ-साथ राजनीतिक चेतना, बंटाईदार-जमींदार संघर्ष, नेताओं का वर्ग स्वार्थ तथा भ्रष्टाचार के कुत्सित रूप को उजागर किया है।

रेणु ने यद्यपि शहरी संवेदना से जुड़ी कहानियां 'टेबिल', 'कस्बे की लड़की' आदि भी लिखी हैं, किन्तु इनमें गहराई तथा रचना शिल्प का अभाव पाया जाता है। वास्तव में रेणु अंचल से जुड़े रचनाकार हैं, जिनको अज्ञेय ने 'धरती का धनी' संबोधन दिया है। रेणु को ग्रामीण भारत की आत्मा से लोगों को जोड़ने वाला रचनाकार माना जाता है। इन्होंने प्रेमचन्द की कहानी की परंपरा को फिर से जोड़ा और मध्यवर्गीय नागरिक को भी चित्रित किया, जो जीवन की केन्द्रियता के कारण लोगों से कट गया था।

रेणु का कथा-शिल्प

रेणु की कहानी 'तीसरी कसम' की संरचना जटिलतर होते हुए यथार्थ का वर्णन करती है, जिसे मूल कथा के साथ कथा सूत्रों को जोड़कर 'लम्बी कहानी' का रूप दिया गया है। वास्तव में यह कहानी किसी विचार या आदर्श का केन्द्र न होकर जीवन के अनुभव से सीधे जुड़ी हुई है, जिसे बहुत बारीक विवरणों के सहारे रेणु ने जीवंत तथा आकर्षक बनाया है। वास्तव में रेणु मुख्यकथा के पात्रों के माध्यम से मात्र कहानी ही नहीं सुनाते अपितु इसके द्वारा वे संपूर्ण परिदृश्य को समाज तक प्रसारित भी करते हैं।

रेणु की कथा भाषा मुख्यत: लोकभाषा है, जिसमें भीतरी लय, प्रवाह, गद्य के साथ ही आंतरिक संगीत, नाद और ध्वनि के तत्त्व विद्यमान हैं, जिसका संयोजन इस लोकभाषा को एक सार्थक भाषा का रूप प्रदान करता है।

वास्तव में रेणु प्रेमचन्द द्वारा निर्मित कथा-भूमि को ग्रहण करते हुए, उसे सांस्कृतिक गरिमा से सुशोभित करते हुए शिल्प के निर्माण में नवीनता तथा आधुनिकता के साथ स्थानीय रंगों को समाहित करते हैं इसलिए प्रेमचन्द द्वारा वर्णित भारतीय ग्राम-समाज रेणु की कलम से जीवंत, रसपूर्ण तथा नये आयामों को ग्रहण करता हुआ प्रतीत होता है।

तीसरी कसम : पाठ-बोध और प्रक्रिया

शीर्षक का अर्थ-संकेत

लोक-जीवन में कसम, सौगंध या शपथ लेने का अर्थ है वह वादा जो अपने आचरण में उतारकर प्राण-पण से निभाया जाता है और जिसको तोड़ना पाप के बराबर समझा जाता है। कसम वास्तव में वह आचार-व्यवहार का मूल्य है, जो आस्था और विश्वास के साथ-साथ ईमानदारी व कथनी-करनी की एकरूपता से जुड़ा होता है। 'तीसरी कसम' कहानी में पहली दो कसमों को पृष्ठभूमि में रखकर नायक हीरामन की तीसरी कसम को नाटकीय सार्थकता देने के उद्देश्य से कथासूत्र का संचालन किया गया है, जोकि हीरामन के चरित्र तथा आचरण के व्यवहार को उजागर करता है।

पिछली दोनों कसमें नैतिक निर्णय

हीरामन गाड़ीवान पिछले कटु एवं गंभीर अनुभवों के निष्कर्ष के आधार पर कसम के रूप में पहला निर्णय और संकल्प चोरबाजारी का माल न लादने तथा दूसरा-बांस लादने हेतु गाड़ी का प्रयोग न करने के अर्थ में दिया गया है। उपर्युक्त दोनों कसमें जीवन की गाड़ी खींचने हेतु हीरामन के लिए नैतिक निर्णय का दर्जा रखती हैं। लेखक के कौशल से ये निर्णय हीरामन की भाषा में संपन्न हुए हैं तथा हीरामन का जीवन उसके बैल और गाड़ी ही हैं। हीरामन की पहली दोनों कसमों को कथानक में प्रयोजन के माध्यम से कुशलतापूर्वक पिरोया गया है, जिनको पृष्ठभूमि में रखते हुए रेणु ने कहानी में 'तीसरी कसम' को ही बताया है।

कम्पनी और कम्पनी की औरत कहानी का ताना-बाना

'तीसरी कसम' का शीर्षक और कथावस्तु एक बार फिर हीरामन के लिए संगीन अनुभव में गुजरते हुए एक नये सबक व नयी कसम के रूप में प्रकट होती है, क्योंकि हीरामन एक प्रकार

www.neerajbooks.com

से 'हीराबाई' के रूप में चोरी-चकारी का माल तथा बांस की लदनी का कार्य ही कर रहा है। हीराबाई मथुरामोहन नौटंकी कम्पनी में लैला की भूमिका निभाने वाली स्त्री है, जिसे मेला उठने के ठीक पन्द्रह पहले रातों-रात चोरी से निकालकर दूसरे मेले की नौटंकी कम्पनी में शामिल होने हेतु ले जाया जा रहा है। लगातार सात वर्षों तक मेलों में लदनी-लादने वाला हीरामन हीराबाई के नाम से अनभिज्ञ है तथा हीराबाई उसकी गाड़ी में चौबीस घंटों का सफर भी तय करती है। हीराबाई कम्पनी की औरत है और उसका कार्य नौटंकी में लोगों का मनोरंजन करना है। उसे रातों-रात दूसरी कंपनी में भेजने के पीछे कम्पनी की औरत व कम्पनी के बीच अपनी कीमत जताने तथा मोल-तोल और भाव बढ़ाने का मसला प्रतीत होता है। दूसरे शब्दों में, नौटंकी या कम्पनी कहने के अर्थ में वाणिज्य-व्यापार का स्वर मुखरित होता है, जिसमें हीराबाई वाणिज्य व्यापार की वस्तु है, जिसे मोल-भाव न होने के कारण अन्य कंपनी की नौटंकी में भेज दिया जाता है।

मेले में पहुंचने के उपरांत हीराबाई के प्रभाव के कारण हीरामन 'पास' के कारण नौटंकी देखने पहुंच जाता है और हीराबाई से लटपट बोल बोलने वालों के साथ मारपीट भी करता है। वहां यह बात उजागर हो जाती है कि हीराबाई मथुरामोहन कंपनी से भागकर आई है। हीराबाई के लठैत तथा नौटंकी के लोगों के साथ मारपीट की घटना व्यवसाय जगत की आपसी प्रतियोगिताओं की गलाकाट स्पर्धा की ओर संकेत करती है।

'तीसरी कसम' एक प्रेम कथा के अतिरिक्त

कुछ विद्वानों का मानना है कि 'तीसरी कसम' कहानी की विषयवस्तु को एक प्रेम कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, किन्तु हीराबाई और हीरामन की बैलगाड़ी की यात्रा एक स्वप्न के रूप में घटित होती है, जिसके उपरांत उनके जीवन में अनेक अनात्मीय संदर्भ जुड़ते जाते हैं, जोकि इसे केवल एक प्रेम कथा सिद्ध नहीं करते हैं। इस कहानी में रेणु ने लोक-जीवन की सांस्कृतिक समृद्धि के साथ-साथ आर्थिक विषमता को भी दर्शाया है, जोकि मानवीय सत्य की वास्तविकता के रूप में प्रकट होती है।

'तीसरी कसम' कहानी का कथ्य प्रेम-कहानी के अतिरिक्त सामाजिक-आर्थिक यथार्थ को भी उजागर करता है, जिसे कहानी के संपूर्ण रूपबंध के तंतुओं में समाहित करके उनकी परस्पर प्रतिक्रियाओं के रूप में रेणु ने व्यंजित किया है तथा यही 'तीसरी कसम' के कथ्य के संदर्भ में सत्य भी है।

अलग-अलग संसारों की सीमाओं का परस्पर उल्लंघन

'तीसरी कसम' की कहानी दो अलग-अलग संसारों की कहानी है, जिसमें एक संसार कंपनी तथा कंपनी की औरत के प्रभाव का है तथा दूसरा इससे बिल्कुल गांव की दुनिया का है, जहां नौटंकी देखना एक दुष्कर्म समझा जाता है। हीरामन की मित्रमण्डली के सभी सदस्य गुप्त रूप से नौटंकी देखते हैं, किन्तु इस सूचना को गांव-घर तक न पहुंचने देने की मिलकर कसम भी खाते हैं। हीरामन के एक मित्र धुन्नीराम को तो अकरणीय अपराध बोध के कारण तेज बुखार भी हो जाता है और वह नौटंकी-कंपनी में ही नौकरी पकड़ने के कारण गांव न लौटने की इच्छा व्यक्त करता है।

कहानी बीच-बीच में हीरामन पर केन्द्रित रहती है तथा कंपनी की औरत हीराबाई की यात्रा के दौरान हीरामन का उस पर मुग्ध हो जाना इसे दो समानांतर संसारों की कहानी बनाता है, जिसमें हीरामन व हीराबाई एक-दूसरे के दायरे को काटकर एक-दूसरे की चौहद्दी में प्रवेश करते हैं। अतः हीराबाई पर मुग्ध होने के परिणामस्वरूप हीरामन तीसरी कसम खाकर अपनी मंशा को इस प्रतिक्रिया के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

हीरामन की इच्छामूर्तियां

बैलगाड़ी की यात्रा के दौरान हीरामन हीराबाई के सान्निध्य में जो समय व्यतीत करता है, उसमें उसे हीराबाई अपरिचित अनुभूतियों के रहस्यलोक में कभी डाकिनी-पिशाचिनी तो कभी चम्पा का फूल, परी, देवकुल की औरत, भगवती मैया लगती है तो कभी वह हीरामन को गुस्सा होने पर आंखों से चिंगारी निकालने वाली औरत लगती है, तो कभी वह हीराबाई की छवि पर गांव-घर का जनाना घरेलू बिम्ब आरोपित कर अपनी अनेक इच्छामूर्तियों का निर्माण करता है। कभी हीरामन हीराबाई को महुआ घटवारिन में रूपांतरित करता हुआ अपने मन की अवस्था को गीत-कथा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। हीराबाई इस गीत से प्रभावित होकर हीरामन को गुरु का दर्जा देती हुई खुद भी वही गीत गुनगुनाने लगती है। ढलान से गाड़ी उतारते समय हीराबाई हीरामन का एक कंधा पकड़ लेती है और चढ़ाई पर उंगलियां कस जाती हैं, केवल यही अभिव्यक्ति हीराबाई की ओर से होती है।

हीरामन और हीराबाई : सम्बन्ध की अर्थछायाएं

हीरामन का संसार 'लगा' और 'देखा' से बना है, क्योंकि उसकी दुनिया सहज विश्वासी दुनिया है और वह पूरी ईमानदारी से गाड़ीवानी करता है। उसकी गाड़ी में सवार 'अकेली औरत' की सुरक्षा का दायित्व भी वह अपना ही मानता है, जबकि इसके विपरीत हीराबाई का संसार 'परखा' से बना है और वह क्योंकि गाड़ीवान के साथ अकेली यात्रा कर रही है इसलिए वह हीरामन को मीता, भैया जैसे संबोधन से पुकारते हुए उस पर भरोसे तथा आत्मीयता का बोझ डालकर अपनी सुरक्षा को सुनिश्चित कर लेती है। उसे हीरामन पर पूर्ण भरोसा हो जाता है तथा वह सहज निश्चिन्त भाव से सोकर, कथा-कहानी, विनोद, गीत-संगीत के साथ अपनी यात्रा पूरी करती है। महुआ घटवारिन के गीत से मुग्ध होकर वह हीरामन को गुरु और उस्ताद कहकर पुकारती है।

हीराबाई कलाकार के रूप में हर जगह सीखने तथा संचित करने लायक सामग्री तलाशती है, तो हीरामन का संसार पशु-प्रकृति-मनुष्य के मध्य अस्तित्व के विभिन्न आयामों का निर्माण करता है, क्योंकि बैल भी महुआ घटवारिन का गीत सुनकर